



पत्र-पुष्प



“ब्रह्मा बाप समान बनने के लिए जमा का खाता भरपूर करो” दादी जी की शुभ प्रेरणायें (22-02-23)

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा अपने दिव्य संकल्प, दिव्य बोल और कर्म द्वारा जमा का खाता बढ़ाने वाले, अपनी बिन्दू रूप स्थिति द्वारा समय, संकल्प और शक्तियों की बचत करने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - मीठे बाबा ने हम सभी बच्चों को जमा का खाता बढ़ाने की गोल्डन चाबी दी है, सेवा करते सदा निमित्त भाव की स्मृति रहे। निमित्त समझने से निर्मान भाव, शुभ भाव और आत्मिक स्नेह का भाव रहता है, इसी स्थिति में सेवा करने से अनेक आत्माओं की भावनायें पूर्ण हो जाती हैं। समय की समीपता प्रमाण अभी हम सबको ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न बनना है। इसके लिए बाबा कहते बच्चे समय, संकल्प और शक्तियों के बचत की योजना बनाओ। जैसे मेरा-मेरा कहकर सब कुछ गंवाया है, ऐसे मेरे को तेरा कह जमा का खाता भरपूर करो। जो साकार के संकल्प वा संस्कार रहे हैं, उनसे अपने को मिलाते चलो तो समय की बचत होगी और बुद्धि की शक्ति जो नष्ट होती है, वह भी बच जायेगी। बाबा कहते बच्चे, अब व्यर्थ खर्चों को फुल स्टॉप लगाओ। अपने प्रति भी अपनी शक्तियां अधिक खर्च नहीं करो। अपनी बुद्धि का, वाणी का और कर्म का, हर समय का प्रोग्राम फिक्स करो और उसी अनुसार ही खर्चों को चलाओ तो बजट प्रमाण कार्य सफल होगा, इसके लिए अमृतवेले उठकर रोज अपनी डायरी बनाओ और उसी प्रमाण बुद्धि द्वारा, वाणी द्वारा और कर्म द्वारा क्या-क्या करना है, उन सभी को फिक्स करो। यही विधि है बचत करने की। बोलो, ऐसा ही अटेन्शन रख चेकर और मेकर बने हो ना!

इस बार शिव जयन्ती पर तो सभी ने खूब धूम मचाई है, चारों तरफ बहुत अच्छी सेवायें हुई हैं, जिसके समाचार सुनते, बहुत हर्ष होता है। कैसे करनकरावनहार बाबा अपने बच्चों को निमित्त बनाए बेहद की सेवायें करा रहा है। वाह बाबा वाह! वाह बाबा के राइट हैण्ड बच्चे वाह! सभी के प्रति दिल की दुआयें निकलती हैं। कितना निःस्वार्थ भाव से अथक बन सभी बाबा को प्रत्यक्ष करने की सेवा में लगे हुए हैं। सेवाओं के साथ-साथ स्वयं को भी सम्पन्न बनाना है। याद और सेवा यही डबल लॉक है जो मायाजीत और प्रकृतिजीत बनायेगा। तो डबल अटेन्शन रख सदा आगे बढ़ते चलो।

बाकी मधुबन बेहद घर की रौनक के समाचार तो आप सब सुनते ही रहते हो। अभी डबल विदेशी भाई बहिनों के आने की मौसम है। बहुत समय के बाद विश्व के सभी सेवास्थानों के मुख्य भाई बहिनें मीटिंग के लिए मधुबन में पहुंच गये हैं। सभी आपस में मिलकर स्व-उन्नति और विश्व सेवा के प्लैन्स बनायेंगे। अभी तो आने वाला यह मार्च का महीना, हमारी दोनों मीठी दादियों का स्मृति मास है। दादी गुल्जार जी के द्वारा हम सबने प्यारे बापदादा की कितनी पालना ली है, वह सबको सदा याद रहती हैं। साथ-साथ हमारी दादी जानकी जी, जो वट वृक्ष समान पूरे विश्व का भ्रमण करते, अपने गुणों

का दान करके अनेक आत्माओं को योग्य और योगी बनाया। ऐसी मीठी दादियां सबके दिलों में सदा याद रहती हैं।

अच्छा - आप सभी का स्वास्थ्य ठीक होगा। सभी को बहुत-बहुत याद.....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. रतनमोहिनी



ये अव्यक्त इशारे



जमा का खाता बढ़ाओ, बचत की स्कीम बनाओ

1) जैसे 'याद' से मन्सा की शक्ति जमा करते हो, साइलेन्स में बैठते हो तो 'संकल्प-शक्ति' जमा होती है। ऐसे वाचा और कर्मणा - इन दोनों शक्तियों को भी जमा करने की स्कीम बनाओ। बोल में जमा करने का साधन है - 'कम बोलो और मीठा बोलो, स्वमान से बोलो'। ऐसे ही कर्मणा सेवा में जमा का खाता तब बढ़ता है जब कोई भी कर्म योगयुक्त, युक्तियुक्त स्थिति में स्थित रहकर करते हो।

2) कई बच्चे भोले बनकर चेकिंग करते हैं सोचते हैं कि सारे दिन में कोई विशेष गलती तो की नहीं, बुरा सोचा नहीं, बुरा बोला नहीं। लेकिन यह चेक नहीं करते कि दिव्य वा अलौकिक कर्म किया? वर्तमान का दिव्य संकल्प वा दिव्य बोल और कर्म भविष्य के लिए जमा करता है। तो इसमें सिर्फ खुश नहीं होना कि हमने वेस्ट तो किया नहीं लेकिन बेस्ट कितना बनाया? दुःख नहीं दिया यह तो ठीक लेकिन सुख देने से जमा होता है, तो सुख कितनों को दिया? ऐसी महीन चेकिंग करो।

3) अपने सब खाते चेक करो - तन से कितना जमा किया? मन के दिव्य संकल्प से कितना जमा किया? और धन को श्रीमत प्रमाण श्रेष्ठ कार्य में लगाकर कितना जमा किया? जमा के खाते तरफ विशेष अटेंशन दो। अगर जमा किया हुआ है तो समय पर दूसरों को दे सकेंगे। नहीं है तो समय पर धोखा खा लेंगे। धोखा खाना अर्थात् दुःख की प्राप्ति होना।

4) जमा का खाता बहुत सहज बढ़ाने की गोल्डन चाबी है - सेवा करने के समय अपने अन्दर निमित्त भाव की स्मृति और निर्माण भाव, शुभ भाव, आत्मिक स्नेह का भाव हो। अगर इस भाव की स्थिति में स्थित होकर सेवा करते हो तो सहज इससे आत्माओं की भावनायें पूर्ण हो जाती हैं।

5) यह संगमयुग जमा करने का युग है इसलिए अपने जमा के खाते चेक करो। चेकर भी बनो, मेकर भी बनो क्योंकि समय की समीपता के नज़ारे देख रहे हो और सभी का वायदा है कि हम समान बनेंगे। तो ब्रह्मा बाप के समान बनने के लिए जमा का खाता भरपूर चाहिए। अभी समय की बचत, संकल्पों की बचत, शक्ति के बचत की योजना बनाकर बिन्दी रूप की स्थिति को

बढ़ाओ।

6) मेरा-मेरा कहने से सब कुछ गँवाते आये, अब तेरा तेरा कहो तो जमा होता जायेगा। वास्तव में यहाँ खर्च करना भी जमा करना है, जितना खर्चा करते हो अर्थात् दूसरों को देते हो उतना पदमगुणा बनता है। एक देना और पदम लेना। एक सेकण्ड की शक्तिशाली याद भी पदमों की कमाई जमा करा देती है।

7) समय और शक्ति की बचत करने के लिए हर समय बापदादा के संस्कारों से मेल करते चलो। जो साकार के संकल्प वा संस्कार रहे हैं उनसे मिलाते चलो तो समय नष्ट नहीं होगा। फौरन निर्णय कर लेंगे कि क्या करना है, क्या नहीं करना है। इससे ही समय की बचत होगी और बुद्धि की शक्ति जो नष्ट होती है, उसकी भी बचत होगी।

8) जैसे स्थूल कारोबार का प्रोग्राम बनाते हो वैसे अपनी बुद्धि की कारोबार का प्रोग्राम बनाओ, क्या-क्या कार्य बुद्धि द्वारा करना है इसका प्रोग्राम बनाने के अभ्यासी बनो तो हर कार्य समय पर सफल होगा। सदैव अन्डरग्राउन्ड अर्थात् अन्तर्मुखी बन हर कार्य करो तो समय और संकल्पों की बचत होगी, सफलता अधिक मिलेगी।

9) जैसे वह गवर्नमेन्ट भी आजकल बचत की स्कीम बनाती है। तो ऑलमाइटी गवर्नमेन्ट सब बच्चों को ऑर्डर करती है कि अब बचत की स्कीम बनाओ। खर्च को फुल स्टॉप लगाओ। अभी अपने प्रति अपनी शक्तियां खर्च नहीं करो। अखुट खजाने के मालिक के बालक हो, इस नशे में रहो तो शक्तियां उधार नहीं लेनी पड़ेगी।

10) बचत करने का सहज और श्रेष्ठ तरीका - अपनी बुद्धि का, वाणी का और कर्म का, हर समय का प्रोग्राम फिक्स करो। जैसे बजट बनाते हैं तो उसमें फिक्स करते हैं कि इतना खर्चा इस पर करेंगे। उस अनुसार ही फिर खर्च को चलाते हैं तब बजट प्रमाण कार्य सफल हो सकता है। तो बजट बनाना अर्थात् अमृतवेले उठकर रोज़ अपनी बुद्धि द्वारा, वाणी द्वारा और कर्म द्वारा क्या-क्या करना है, उन सभी को फिक्स करो। रोज़ की डायरी बनाओ और उसी प्रमाण कार्य करो।

11) अब आप श्रेष्ठ आत्माओं को विश्व कल्याणकारी बनना है। इसके लिए समय वा शक्तियाँ न सिर्फ अपने प्रति लेकिन अनेक आत्माओं की सेवा प्रति भी स्टॉक जमा होना चाहिए। अगर वेस्ट होता रहेगा तो स्वयं को भी भरपूर अनुभव नहीं करेंगे इसलिए अपने प्रति आवश्यक समय वा शक्तियों में से एकाँनामी का लक्ष्य रखते हुए बचत करो क्योंकि विश्व की सर्व आत्मायें आप श्रेष्ठ आत्माओं का परिवार है। जितना बड़ा परिवार होता है उतना ही एकाँनामी का ख्याल रखा जाता है।

12) जमा का खाता इतना भरपूर हो जो 21 पीढ़ी सदा सम्पन्न रहें, आपकी वंशावली भी मालामाल रहे। न सिर्फ 21 जन्म लेकिन द्वापर में भी भक्त आत्मा होने के कारण कोई कमी नहीं होगी। इतना धन द्वापर में भी रहता है जो दान-पुण्य अच्छी तरह से कर सकते हो। कलियुग के अन्त में भी देखो, भले काला धन नहीं है लेकिन दाल-रोटी तो है ना! तो इस समय जो कमाई जमा की है, उसी प्रमाण अन्तिम जन्म में दाल-रोटी खाते हो।

13) आजकल के जमाने में वेस्ट से बेस्ट बनाते हैं। वेस्ट को ही बचाते हैं। तो आप सब भी बचत का खाता सदा स्मृति में रखो। बजट बनाओ। संकल्प शक्ति, वाणी की शक्ति, कर्म की शक्ति, समय की शक्ति कैसे और कहाँ कार्य में लगानी है। ऐसे न हो यह सब शक्तियाँ व्यर्थ चली जाएं। संकल्प भी व्यर्थ वा साधारण न हो, उन्हें भी बचाओ। सदा समर्थ संकल्प करो।

14) सर्व शक्तियों की बचत के लिए सारे दिन का चार्ट बनाओ। जितना हर शक्ति को कार्य में लगायेंगे उतना शक्ति बढ़ेगी। साधारण सेवा की दिनचर्या वा साधारण प्रवृत्ति की दिनचर्या, इसको बचत का खाता जमा होना नहीं कहेंगे। उल्टा बोल नहीं बोला, लेकिन ऐसा बोल बोला जो किसी नाउम्मीद को उम्मीदवार बनाया, हिम्मतहीन को हिम्मतवान बनाया? खुशी के उमंग, उत्साह में किसको लाया? यही है जमा करना अर्थात् बचत करना।

15) ईश्वरीय बजट ऐसा बनाओ जो विश्व की हर आत्मा कुछ न कुछ प्राप्त करके आपके गुणगान करे। सभी को कुछ न कुछ देना ही है। चाहे मुक्ति दो, चाहे जीवनमुक्ति दो। ईश्वरीय बजट अर्थात् सर्व आत्मायें, प्रकृति सहित सुखी वा शान्त बन जावें।

16) सर्व खजानों की बचत करने के लिए सहनशील बनो। सहनशील श्रेष्ठ आत्मा सदा ज्ञान-योग के सार में स्थित हो विस्तार को, समस्या को, विघ्नों को सार में ले आती है। जैसे लम्बा रास्ता पार करने में समय, शक्तियाँ समाप्त हो जाती हैं

अर्थात् ज्यादा यूज होती हैं। ऐसे विस्तार है लम्बा रास्ता पार करना और सार है शार्टकट रास्ता पार करना। पार दोनों ही करते हैं लेकिन शार्टकट करने वाले समय और शक्तियों की बचत होने कारण निराश व दिलशिकस्त नहीं होते, सदा मौज में मुस्कराते पार करते हैं।

17) सारे दिन में मन्सा, वाचा, कर्मणा में खर्च और बचत का पोतामेल रखो। अब विशेष वाचा और कर्मणा - इन दोनों शक्तियों को जमा करने की स्कीम बनाओ। मूल है मन्सा, लेकिन इसके साथ-साथ विशेष वाचा और कर्मणा में बचत करो क्योंकि मन्सा फिर भी गुप्त है, और यह प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले हैं।

18) अभी फाइनल समाप्ति का बिगुल नहीं बजा है, इसलिए उड़ो और औरों को भी उड़ाते चलो। इसकी विधि है वेस्ट अर्थात् व्यर्थ को बचाओ। बचत का खाता, जमा का खाता बढ़ाते चलो क्योंकि 63 जन्म से सभी खाते व्यर्थ गंवाकर खत्म कर दिया है। श्वास का, संकल्प का, समय का, गुणों का, शक्तियों का, ज्ञान का... सब खजाने गंवाये हैं। कितने खाते खाली हो गये! अभी इन सभी खातों को जमा करो।

19) विनाशी खजाने खर्च करने से कम होते हैं, खुटते हैं और यह सब खजाने जितना स्व के प्रति और औरों के प्रति शुभ वृत्ति से कार्य में लगायेंगे, उतना जमा होता जायेगा, बढ़ता जायेगा। यहाँ खजानों को कार्य में लगाना, यही जमा करने की विधि है। यहाँ रखना जमा करने की विधि है और यहाँ लगाना जमा करने की विधि है।

20) समय को स्वयं प्रति या औरों प्रति शुभ कार्य में लगाओ तो जमा होता जायेगा। ज्ञान को कार्य में लगाओ। ऐसे गुणों को, शक्तियों को जितना लगायेंगे उतना बढ़ेगा। यह नहीं सोचना - जैसे वह लॉकर में रख देते हैं और समझते हैं बहुत जमा है, ऐसे आप भी सोचो मेरे बुद्धि में ज्ञान बहुत है, गुण भी मेरे में बहुत हैं, शक्तियाँ भी बहुत हैं। लॉकप करके नहीं रखो, यूज करो।

21) जैसे भक्ति मार्ग में नियम है कि जितना भी आपके पास स्थूल धन है तो उसके लिये कहते हैं - दान करो, सफल करो तो बढ़ता जायेगा। सफल करने के लिए भक्ति में भी कितना उमंग-उत्साह बढ़ाते हैं। तो आप भी चेक करो कि सर्व खजाने सफल कितना किये? खजाने खर्च कम हो लेकिन प्राप्ति ज्यादा हो। जो साधारण व्यक्ति दो चार मिनट संकल्प चलाने के बाद, सोचने के बाद सफलता या प्राप्ति कर सकता है वह आप एक दो सेकेण्ड में कर सकते हो। जिसको साकार में भी ब्रह्मा बाप कहते थे कम खर्चा बाला नशीन। खर्च कम करो लेकिन प्राप्ति

100 गुणा हो। इससे जो समय, संकल्प की बचत होगी वह औरों की सेवा में लगा सकेंगे।

22) जैसे दान पुण्य वही कर सकते हैं जिनके पास धन की बचत होती है। अगर अपने प्रति लगाने जितना ही कमाया और खाया तो दान पुण्य नहीं कर सकेंगे। तो कम समय में रिजल्ट ज्यादा, कम संकल्प से अनुभूति ज्यादा हो तब ही हर खजाना औरों के प्रति यूज कर सकेंगे। ऐसे ही वाणी और कर्म, कम खर्चा और सफलता ज्यादा तब ही कमाल गाई जायेगी।

23) अगर अटेंशन दे करके कोई भी चीज़ की बचत करते हो तो चाहे बचत थोड़ी हो लेकिन बचत की खुशी एक्स्ट्रा होती है। अगर 10 पाउण्ड या डॉलर खर्च होना है और आपने एक पाउण्ड या डॉलर बचा लिया तो एक पाउण्ड की बड़ी खुशी होगी कि बचाकर आये हैं।

24) पहले तो अपने संकल्पों की बचत करो, वेस्ट के बजाय बेस्ट के खाते में जमा करो और दूसरा अगर बचत नहीं कर सकते हो तो व्यर्थ को समर्थ संकल्पों में परिवर्तन करो। यदि कंट्रोल नहीं हो सकता है तो परिवर्तन कर उसकी रफ्तार को चेंज करो। नहीं तो आदत पड़ जाती है। 5 मिनट भी वेस्ट से बेस्ट में जमा हो गये तो 12 घण्टे में 5-5 मिनट भी कितने हो जायेंगे? और खुशी कितनी होगी? और जितना श्रेष्ठ संकल्पों का खाता जमा होगा तो समय पर जमा का खाता काम में आयेगा।

25) जैसे स्थूल धन में अगर जमा नहीं होता है तो समय पर धोखा खा लेते हैं। ऐसे यहाँ भी अगर खजाने जमा नहीं हैं तो जब कोई बड़ी परीक्षा आयेगी तो मन और बुद्धि खाली-खाली लगेगी, शक्ति नहीं होगी इसलिए जमा करना सीखो। श्रेष्ठ संकल्पों का खाता भरपूर हो। खाली-खाली नहीं हो। यही श्रेष्ठ संकल्पों का खजाना श्रेष्ठ प्रालब्ध का आधार बनेगा।

26) रोज़ रात को अपने इन खजानों के बचत का पोतामेल चेक करो। कितने संकल्प, कितना समय बेस्ट के खाते में जमा किया? गुण और शक्तियों से कितना श्रेष्ठ कार्य किया? तो संकल्प, समय, गुण, शक्ति इसका पोतामेल रोज़ रात्रि को चेक करो फिर टोटल करो कितना बचत का खाता हुआ? यही बचत स्वयं को भी सहयोग देती रहेगी और औरों को भी देगी। जब बचत के ऊपर अटेंशन देंगे तो मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

27) सदा चेक करो कि आज के दिन मन्सा द्वारा या कोई भी सेवा द्वारा कितने पुण्य जमा किये? और पुण्य के आधार से छोटी-छोटी बातें कितनी समाप्त हो गई? खर्च कितना हुआ

और बचत कितनी हुई? अगर बार-बार विघ्न आते हैं और उसको मिटाने के लिए गुण और शक्तियों को खर्च करते हैं तो वह कितना हुआ? और योगयुक्त अवस्था से बाप को साथी बनाकर सेवा करने में पुण्य का खाता कितना जमा हुआ? ऐसी चेकिंग की मशीनरी दिल के आफिस में सेट कर चेक करते रहो तो चेंज हो जायेंगे।

28) जो भी श्रेष्ठ कार्य करना है, वह अब करना है। हर कार्य में हर समय याद रखो कि 'अब नहीं तो कब नहीं।' जिसको यह स्मृति में रहता है वह कभी भी समय, संकल्प वा कर्म वेस्ट होने नहीं देंगे, सदा जमा करते रहेंगे। तो हर सेकण्ड के हर संकल्प का महत्व जानते हुए जमा का खाता भरपूर करो तब 21 जन्म के लिए अपना खाता श्रेष्ठ बना सकेंगे।

29) जिनका सेवाकेन्द्र और सेवा निर्विघ्न हैं, जो स्वभाव-संस्कार के टक्कर से मुक्त हैं, उनकी सेवा का खाता जमा होता है। अगर कोई सेन्टर भी बढ़ाता जाये और माया भी बढ़ाता जाये तो ऐसी सेवा बाप के रजिस्टर में जमा नहीं होती है। कई सोचते हैं हम तो बहुत सेवा कर रहे हैं, नींद भी नहीं करते, खाना भी एक बार बनाके खा लेते - इतना बिजी रहते! लेकिन सेवा के साथ अगर माया में भी बिजी हैं, यह क्यों हुआ, यह कैसे हुआ, इसने क्यों किया, मैंने क्यों नहीं किया, मेरा हक, तेरा हक.... ऐसी सेवा का खाता जमा नहीं होता।

30) वाणी में बाप को प्रत्यक्ष करने का जौहर वा शक्ति तब आयेगी जब इसे व्यर्थ जाने से बचायेंगे। अभी तक साधारण बोल ज्यादा हैं इसलिए आवाज बुलन्द होने में देरी हो रही है। जैसे ब्रह्मा बाप के बोल - फरिश्तों के बोल थे, कम बोल और मधुर बोल थे। ऐसे यथार्थ बोल बोलो। कारोबार के लिए बोलना पड़ता है लेकिन वह भी लम्बा नहीं करो। अभी शक्ति को जमा करो तब वाणी में जौहर आयेगा।

31- अब अपने पुरुषार्थ का समय दूसरों को सहयोग देने में लगाओ। तो आपका पुरुषार्थ स्वतः ही जमा होता जायेगा। दूसरों को सहयोग देना अर्थात् अपना जमा करना। अभी ऐसी लहर फैलाओ - देना है, देना है, देना ही देना है। देने वाले को सबके दिल की दुआयें मिलती हैं। जिसने हर एक के दिल की दुआयें जमा की हैं उनका पुरुषार्थ स्वतः सहज हो जाता है। जैसे हर चीज़ का स्टॉक आवश्यकता प्रमाण जमा करते हो, ऐसे अभी यह स्टॉक जमा करने की चेकिंग करनी है, साथ-साथ अमृतबेले उठकर अपने को अटेंशन के पट्टे पर चलाना तो पट्टे पर गाड़ी ठीक चलती रहेगी।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुबन

“आदरणीय गुल्जार दादी जी के पुण्य स्मृति दिवस पर - विशेष उनके द्वारा उच्चारित अनमोल रत्न”

- 1) कोई भी बात मुश्किल तब लगती है जब माया वार करती है। हम सबका यह लास्ट जन्म है। तो लास्ट जन्म में सारा ही 63 जन्म का हिसाब-किताब चुक्ती होना है फिर चाहे योगबल से करो, चाहे बीमारी द्वारा करो, चाहे सहनशक्ति द्वारा करो। तब ही बाबा के साथ घर जा सकेंगे और साथ में फर्स्ट जन्म में भी आ सकेंगे।
- 2) समस्या को परिवर्तन करके समाधान स्वरूप बनने के लिए स्वयं में शक्ति भरनी है। अपने को शिवशक्ति समझे तो कभी भी नरम स्वभाव, रोना, रूसना... इस प्रकार की कोमलता नहीं होगी। तो अपने को छोटी वा कुमारी या पुरुषार्थी नहीं समझना। कुमारी है तो कोमलता है। अभी तो बाबा का स्थान मिल गया, बाबा की गुरु भाई बन गई, तो अभी कर्मों की गति को ध्यान में रखते हुए बहुतकाल से तीव्र पुरुषार्थी की स्थिति होनी चाहिए। बहुतकाल के पुरुषार्थ के विजयी क्योंकि हम जो भी कुछ करते हैं, उसका हिसाब तो बन ही जाता है। गलती की तो दण्ड का भी हिसाब है।
- 3) ज्ञान के प्वाइन्ट केवल रिपीट नहीं करो, लेकिन शुद्ध संकल्पधारी समर्थी का स्वरूप प्रत्यक्ष दिखाई दे। ज्ञान का मनन करके उसी में मगन हो जाओ अर्थात् भिन्न-भिन्न ज्ञान के प्वाइन्ट में मन स्थिर हो जाये। मनन करना अलग है, रिपीट करना अलग है, वो भी अच्छा है। अलग-अलग टाइम पर अलग-अलग टॉपिक के प्वाइन्ट पर मनन करते मगन हो जाओ। जैसे योग की सबजेक्ट में मनन करते-करते उस रूप में चले जाओ तो सारा व्यर्थ खत्म होता जायेगा।
- 4) कुछ भी करो लेकिन व्यर्थ संकल्पों को स्टॉप करो क्योंकि यही योग में बहुत डिस्टर्ब करते हैं। बाबा कहता है जो मैं जिस दिन कहता हूँ, उस ताजे माल में ताकत होती है, उसी दिन आप प्रैक्टिकल करो तो आपको हिम्मत भी मिलेगी, बाबा की मदद भी मिलेगी। बांसी खाना खाने से तो बीमारी ही आयेगी।
- 5) मिट्टी के मटके को भी चारों तरफ देख करके लिया जाता है। तो क्या मैं तुमको ऐसे ही सरेण्डर करा दूँगा? पहले कुछ करो तो सही, मरो तो सही। जीते जी मरना तो पड़ेगा ना! सहन करना

पड़ेगा, शक्ति रूप बनना पड़ेगा, यह तो करना ही होगा। तब हमारे में वो शक्ति भरेगी फिर जीते जी मरना बहुत अच्छा और मीठा लगेगा। लेकिन जिसके संस्कार टक्कर खाते होंगे वह कहेंगे गलती कर ली, पता नहीं किसके संग में आ गई, मर तो गई लेकिन है बड़ा मुश्किल। सरेण्डर का फाइल तो बन गया, लेकिन है बड़ा मुश्किल! अभी घर भी नहीं जा सकती, शादी भी नहीं कर सकती और सेन्टर पर चल भी नहीं सकती, अभी कहाँ जाऊँ... तो व्यर्थ संकल्प चलेंगे ना।

6) माया भिन्न-भिन्न रूप में व्यर्थ लाती है, उस पर किस शक्ति से हम विजय पा सकते हैं, वो दोनों बातें अच्छी तरह से जानते तो हैं, परन्तु होता क्या है? उस समय वो याद ही नहीं आता है, समय पर शक्ति यूज करने नहीं आती है, इसके कारण बार-बार समस्यायें वा व्यर्थ संकल्प आते रहते हैं।

7) समझो आपके पास ईर्ष्या आई, उसको आपने जीता, तो कैसे जीता? चाहे मदद लेके जीता, चाहे योग से जीता, चाहे मनन से जीता, जीता तो सही, पास तो किया ना। फिर दूसरे बारी जब आता है तो फिर क्यों फेल हो जाते? समझते हैं यह समस्या है, पेपर है तो अभी इसमें सिर्फ सोचने समझने से कुछ नहीं होगा। इसके लिए बाबा कहते थे जैसे तलवार को म्यान में डालके रखते हैं लेकिन अगर बीच-बीच में उसको साफ नहीं करें, यूज नहीं करें, देखें नहीं तो जब समय आयेगा और उस समय म्यान से तलवार निकालेंगे तो उससे अपनी भी अंगुली नहीं काट सकेंगे क्योंकि जंक खाके उसकी वो धार खत्म हो गयी। तो बार-बार मनन करो, जैसे सहनशक्ति को यूज कैसे करें?

8) मानो मेरे सामने ऐसे पेपर आयें या फलाने ने मेरे साथ यह किया, उस समय देखो क्या करना है? तो शक्तियों को यूज करो, उसका वर्णन करते रहो। आज समाने का पेपर दूँगी, तो उस समय क्या करूँगी... ऐसे यह मनन करते रहो और यूज करते रहो। यूज नहीं किया तो रिवाइज करो। यह करने से क्या फायदा होता है, यह न करने से क्या नुकसान होता है, ऐसे मनन करो। तो मनन करने से वो शक्ति आपके पास हमेशा हाज़िर रहेगी।

9) कोई चीज़ बढ़िया हो उसको सम्भाल के रखा भी हो परन्तु वो समय पर काम में नहीं आवे तो उसकी क्या वैल्यू? हमारे लिए तो वो बेकार ही हुई ना। ज्ञान सुनते-सुनते शक्तियों की परिभाषा जो आपके पास है, उसे मनन करके यूज करो तो समय पर आपको काम में आयेगी। समय पर शक्ति इमर्ज होगी। तो यह प्रैक्टिस करो, समय पर मेरी शक्ति काम में आती है या नहीं? तो एक सहनशक्ति को धारण करना है क्योंकि उसके बिना गति नहीं है। दूसरा समाने की शक्ति भी आपको बहुत चाहिए।

10) हर एक अपने पंखों को पहले चेक करो - ज्ञान और योग की दोनों ही सबजेक्ट मेरी ठीक हैं? जब मैं उड़ना चाहूँ तब उड़ सकता हूँ? हमारे ज्ञान के तलवार की धार बड़ी तेज होनी चाहिए और इस ज्ञान की तलवार को केवल म्यान में ही रख करके खुश नहीं हो जाओ बल्कि हमेशा अपनी इस तलवार को देखते रहो तो समय पर काम में आ सकेगी।

11) अन्त में यह पांचों तत्व आंधी, तूफान, आग, पृथ्वी का हिलना... यह सब इकट्ठा काम करेंगे तो सोचो उस समय हमारी कैसी स्थिति होनी चाहिए? अभी तो फिर भी ठीक है, कहीं कुछ, कहीं कुछ होता है तो एक दो के सहारे से, स्थान के सहयोग से अपने को फिर भी बचा रहे हैं। लेकिन जब पांच तत्व ही एक साथ काम करेंगे तो अन्त में ऐसा कोई सहारे का स्थान नहीं मिलेगा। उस समय तो हमारी यही तैयारी काम आयेगी कि फरिश्ता बनके उड़ जायें, बस।

12) अन्त समय के लिए अभी से अशरीरी बनने का अभ्यास करो। अशरीरी माना शरीर में होते हुए भी शरीर का भान न हो। शरीर के सम्बन्ध वा पदार्थों के तरफ बार-बार मन का खिंचाव न हो। इसके लिए जितना समय चाहे, जहाँ चाहे उतना समय हमारा मन वहाँ ही रहे, यह अभ्यास चाहिए और यह अभ्यास सारे दिन

में भी बीच-बीच में करते रहो।

13) अभी-अभी बॉडी कान्सेस, अभी-अभी सोल कान्सेस और अभी-अभी बाबा की याद। बहुतकाल युद्ध के अभ्यासी होंगे तो चन्द्रवंशी में पहुँचेंगे। फिर पहले युग का सुख तो ले ही नहीं पायेंगे। तो ब्रह्माकुमार बनके क्या किया? बी.के. बने हैं तो बाबा से पूरा वर्सा लेना चाहिए। अगर योग में मेहनत वा युद्ध है तो कर्मातीत वा अशरीरी स्थिति का अनुभव नहीं कर सकेंगे। फिर अन्त में आप युद्ध में ही जायेंगे क्योंकि अन्तकाल तो किसका पूछकर नहीं आयेगा।

14) बाबा ने कहा है कि सब कुछ अचानक ही होने वाला है इसलिए एवररेडी रहो। जो एवररेडी रहेंगे वही पास होंगे। कल क्या होगा, कुछ भी हो सकता है, इतना एवररेडी हमको रहना चाहिए। इसके लिए मम्मा का एक फेवरेट स्लोगन था कि हर घड़ी हमारी अन्तिम घड़ी है। अन्तिम घड़ी में और कोई बात याद नहीं हो।

15) कभी भी कुछ भी हो सकता है लेकिन मैं रेडी हूँ? मैं सेकण्ड में उड़ सकती हूँ या टाइम लगेगा! बाबा को उल्हना देंगे या बाबा से मदद मिलने लिये बाबा को याद करेंगे! लेकिन बाबा ने कहा है कि हिम्मत वाले को मदद मिलेगी। हिम्मत माना योग ठीक हो, विजयी हो। विजयी को मदद नहीं मिले, यह नहीं हो सकता है।

16) याद का टाइम बॉक्स बनाओ। एक-एक मिनट करके 10 मिनट हो जायेंगे तो हमारी लिंक जुटी रहेगी, हर घण्टे में 5 मिनट, 2 मिनट जितना समय निकाल सकते हो, उतना निकालने का अभ्यास करके बाबा को याद करो। बीच-बीच में चेक भी करो कि हमारा सारे दिन में याद का लिंक जुटा रहा? निरन्तर याद का अभ्यास बढ़ाओ तो अन्त में उसकी मदद मिलेगी।

दादी जानकी जी द्वारा उच्चारित अनमोल वचन

दादी जानकी जी के पुण्य स्मृति दिवस निमित्त उनके द्वारा उच्चारित अनमोल महावाक्य

1) शुक्रिया बाबा आपका। सारे दिन में कितना बारी दिल से शुक्रिया निकलता है? शब्दों से ही नहीं लेकिन लाइफ में बाबा के प्यार, दुआयें, वरदान, सकाश का अनुभव हो। बाबा, बाबा है, मम्मा, मम्मा है, हम बच्चे, बच्चे हैं। सच्चे बच्चे वो जो बाप समान हों। कोई अन्तर न हो, कोई देखे तो लगे बाबा ऐसा होगा,

मम्मा ऐसी होगी क्योंकि मम्मा एग्जाम्पल होके रही है।

2) जैसे बाबा ने पढ़ाया है, मात-पिता, सखा, सदगुरु का पार्ट बजाया है। मम्मा आत्म-अभिमानि स्थिति में ऐसा रही है जिसमें देह अभिमान का अंश नहीं रहा। उन्हें बाबा की याद ऐसी गम्भीरता पूर्वक है। नॉलेज को ऐसे धारण किया है जो सरस्वती बन गयी है।

पहले राधे है, नाम से ही लगा यह सतयुगी कृष्ण की राधे है। कल्प पहले वाली हूँ, सतयुग में आने वाली हूँ, यह स्मृति में रहने की आदत पड़ जाये कि मैं वही हूँ। तो मैं अपने आप को देखूँ।

3) जैसे मम्मा ज्ञानी तू आत्मा, निरन्तर योगी थी। हम सब कहे माँ और माँ कहे तुम मेरे बच्चे हो। ब्रह्मा बाबा ने भी सर्व सम्बन्धों का पार्ट प्ले किया है लेकिन वर्सा हमें दादे से मिलेगा, यह बताया है। जो शमा पर फिदा होता है उसकी बुद्धि इधर-उधर चक्कर नहीं लगाती है। स्वदर्शन चक्र के बदले बुद्धि और किसी चक्कर में आती है तो वो चक्कर इतना पकड़ लेता है जो कभी याद नहीं आता है - मैं कौन हूँ और किसकी हूँ!

4) बुद्धि चलाने वाले का बुद्धियोग कभी लगेगा नहीं। बुद्धि को शान्त रखने वा बुद्धि को अचल अडोल रखने का समय दो। निश्चय का बल क्या होता है, उसका अनुभव करो। बलिहारी समय की और बाप की है, फिर बलिहारी हमारे भाग्य की है। समय और बाप दोनों हमारे साथ हैं। समय भी बहुत गया, अब थोड़ा रहा। थोड़े समय के अन्दर अनेक जन्मों के पुराने हिसाब-किताब समाप्त करना है। इस जन्म में कोई नया हिसाब नहीं बनाना है। बनाया तो पुराना खत्म नहीं होगा। अन्त घड़ी आ जायेगी तो हमारा हाल क्या होगा।

5) हर घड़ी को अन्तिम घड़ी मानना और जानना, ऐसी स्थिति हमारी बहुतकाल से बनी रहे तो दुनिया हमारा जो इन्तजार कर रही है, वह इन्तजार पूरा हो जायेगा। बाबा यही चाहता है जिनको मैंने इतनी पालना दी, पतित से पावन बनाया, तो उनके अन्दर इतना ईश्वरीय प्यार और नियम पर चलने की शक्ति हो जो अनेक आत्माओं को प्रेरणा मिले।

6) कई बच्चे अभी नये पैदा हुए हैं, उनके जिगर में है कि थोड़े समय में हम आगे बढ़ जायें। टाइम थोड़ा है आज जो किया कल काम आयेगा। आज मिस किया तो कल क्या करेंगे। कल की बात बीती, अच्छी कमाई नहीं की है तो आज कर लो, जो कल काम आयेगी। आज नहीं करेंगे, कल पर रखेंगे तो क्या होगा! बाबा समय का ध्यान खिचवा रहा है, समय पर ध्यान रखो।

7) बाबा कहते हैं बच्चे, मुझ बाप की बातें ध्यान से सुनो, श्रीमत पर चलो। मन में और मतों को घुसने नहीं दो, अपनी मत भी धोखेबाज है। अपनी मत भी चलाते हैं तो श्रीमत पर चलना मुश्किल लगता है। दूसरा औरों की मत के जंगल में चले जाते हैं फिर जंगल में डर लगता है, वो फूल बन नहीं सकते, उनकी खुशबू फैल नहीं सकती।

8) बाबा देख रहा है कि मेरे कौन से बच्चे खुशबूदार फूल हैं! खुशबू बेहद में रहने वाले की फैलती है। टाली, पत्ते, कांटे अपना काम करेंगे उसके बगैर भी फूल कहाँ दिखेगा। टाली के बगैर भी गुलाब नहीं होता है, पकड़ेंगे कहाँ। परन्तु नज़र जाती है फूल के रंग और खुशबू पर। अंश मात्र भी बॉडी कान्सेस न हो। गुणवान की खुशबू नेचरल होती है। गुलाब में बहुत गुण होते हैं। सूख भी जाता है तो गुलुकन्द बनायेंगे तो भी काम का, गुलाब जल बनायेंगे तो भी काम का।

9) ध्यान रहे कि मैं बाबा के काम लायक बच्चा बनूँ। हम कोई शिव की बरात में जाने वाले लूले-लंगड़े नहीं हैं। जो बरात में जाने वाले होंगे वो पीछे आयेंगे, साथ में जाने वाले हंसते-गाते जायेंगे। चेहरा सदा मुस्कराता रहे, बाबा के गुण गाता रहे, कौन होगा जो स्वयं और बाबा को ही देखता है और किसी को नहीं देखता?

10) हमारी पर्सनेलिटी में कोई भी इमप्योरिटी न हो। कोई संस्कार, लगाव झुकाव वाला न हो। सदा ही पीसफुल और लवफुल हो, मर्यादा में चलने वाले फुल मार्क्स लेने वाले हो।

11) बाबा कहते अपनी घोट तो नशा चढ़े, किसी को भी नहीं देखो। अपने में भी पुरानी बातों को न देखो। अन्दर चेन्ज हो गये। समय और बाबा दोनों कहते हैं मैं तुमको चेन्ज करने वाला हूँ। दोनों हाथ फैला के बैठे हैं। समय और बाबा के बीच में हम हैं, समय नहीं गंवायेंगे, बाबा का हाथ नहीं छोड़ेंगे। समय कहता है तुम मेरा कदर करता है, मैं तुम्हारा कदर करता हूँ।

12) कईयों को शान्त रहना मुश्किल लगता है। समय पर सब कुछ शान्ति से होता है। बाबा कहते मैं तुमको सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्वगुण सम्पन्न बना ही दूंगा, छोड़ने वाला नहीं हूँ। हम भी कहते हैं बाबा हम भी छोड़ने वाले नहीं हैं। उसने वायदा किया है, निभा रहा है, पर हमने भी वायदा किया है तो कोई भी बेकायदे काम न करें। बाबा कहता है बच्चे कायदे अनुसार चलेंगे तो तुमको बहुत फ़ायदे होंगे। बाबा ने सारे विश्व को सामने रखा है। समय पर सब हो जायेगा।

13) हम सबके मुख से सदा मीठा बाबा, प्यारा बाबा निकलता है। जो सबका है वो मेरा हो गया तो बहुत बड़ी बात हो गयी। सब उसको बाबा माने न माने, पर मैंने तो मान लिया, जान लिया, उनसे पा लिया, तब कहते हैं प्यारा बाबा। बाबा इतना प्यारा है जो मुझे प्यार देकर ज्ञानी तू आत्मा, प्रिय आत्मा बना लिया।

14) गीता में भी है ज्ञानी तू आत्मा मुझे प्रिय है। ज्ञानी तू आत्मा

माना मात-पिता के दिल तख्त पर बैठ जाओ। पहले प्रिय बनेंगे फिर मीठा बनेंगे फिर बापदादा के दिल तख्त पर बैठेंगे। संगमयुग में बापदादा के दिल का तख्त सतयुग के तख्त से भी बड़ा है। वो भी तब मिलेगा जब अकालतख्त पर बैठने के आदती होंगे।

15) हमारा बाबा अव्यक्त वतनवासी होकर हमें खींच रहा है, अभी हमें सोचने में समय नहीं गँवाना है, जितना जल्दी हो सके

जो करना है सो कर लें क्योंकि कल किसने देखा है। कल अच्छा हो जाये, उसके लिए अभी अच्छा करना है।

16) यह अन्तिम जन्म की हमारी अन्तिम घड़ियां हैं। हमें देह सहित देह के सब सम्बन्धों को भूल एक बाबा को ही याद करना है। मैं और मेरेपन से मुक्त रहकर जीवनमुक्त स्थिति का रस लेना है। मैं मेरा खत्म तो जो बाबा का सो मेरा हो जाता है।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

एकाग्र बुद्धि से परमात्मा को याद करो तो श्रेष्ठ धारणायें जीवन में सहज होंगी

1) संगमयुग पर बाबा से हेल्थ, वेल्थ और हैपीनेस का वस। मिलता है। भक्ति में यह तीनों भगवान से मांगते थे, ज्ञान में यह अपने आप बाबा दे रहा है। भक्ति में जब तक सामने कोई मूर्ति नहीं, मंत्र नहीं तब तक याद नहीं कर सकते। ज्ञान मार्ग में न कोई मूर्ति, न मंत्र, न कोई माला.. ज्ञान मार्ग में समझ मिल गई। विवेक कहता है भक्ति में बहुत मेहनत है, बुद्धि भटकती है, धक्के खाती है। वहमी बन जाते हैं। करते हैं तो कुछ प्राप्ति नज़र नहीं आती, नहीं करते हैं तो डर लगता है, कुछ हो न जाये।

2) बाबा ने ज्ञान देकर हमें निर्भय बना दिया है। भक्ति के बंधनों से छुटकारा पाने में बहुत बहादुरी चाहिए। देह के सम्बन्धों से, दुनियावी पदार्थों से छुटकारा पाना बड़ी बात नहीं है, लेकिन भक्ति से छुटकारा पाना सहज नहीं है। यह ज्ञान नास्तिक के लिए सहज है, वह जल्दी समझ जायेगा लेकिन भक्त के लिए कठिन है। भक्ति में जो अल्पकाल की प्राप्ति है, उसमें वह फंसा रहता है। अब हमारी बुद्धि में भक्ति और ज्ञान का कान्फ़्रॉन्ट है, इसलिए अब भटकने की जरूरत नहीं। फालतू पैसा खर्च करने की जरूरत नहीं। अब समझ आ गई कि एक बाबा को याद करना है, अपनी जीवन सफल करनी है।

3) कई पूछते हैं - हमारी धारणा श्रेष्ठ कैसे बनें? धारणा श्रेष्ठ तब बनेगी जब पहले बुद्धि क्लीयर हो। बुद्धि का भटकना छूटे। बुद्धि एकाग्र होकर परमात्मा बाप को याद करे तो धारणा श्रेष्ठ बने। एक धारणा होती है गुणों की, दूसरी धारणा होती है ज्ञान वा योग लगाने की। गुण धारण करने की धारणा अलग है, योगयुक्त होने के लिए धारणा अलग है।

4) योगयुक्त रहने के लिए अशरीरी होकर बाबा से लिंक जोड़ने

की लगन हो, इसके लिए चाहिए अन्तर्मुखता और एकान्त। जिसे योगयुक्त होकर रहने की लगन है वह कभी यह नहीं कह सकता कि एकान्त में रहने का टाइम नहीं मिलता है। उसकी रात में भी कई बार आंख खुल जायेगी। नींद ऐसी नहीं होगी जो सोया सो खोया। कोई ऐसे कहते हैं कि क्या करें नींद ही नहीं खुली। कोई फिर कहते नींद आती ही नहीं। योगी के यह चिन्ह नहीं हैं। ऐसे नहीं नींद आये तो बहुत आये, न आये तो आये ही नहीं। जो फालतू ख्याल करते हैं उन्हें नींद नहीं आती। जो फालतू ख्यालात से फ्री रहते हैं वह बाबा की याद में सो जायेंगे। जो बाबा की याद की गोली नहीं खाते, उन्हें नींद के लिए गोली लेनी पड़ती है। योग के टाइम नींद आयेगी, वैसे नींद के समय नींद नहीं आयेगी।

5) हमारी नींद ऐसी हो जो गुडनाइट की और बाबा की गोद में चले गये फिर आंख खुलने का समय आये तो अपने आप खुल जाए, दिल कहे उठकर बाबा को याद करूँ। जो उठते ही बाबा की याद में बैठता है, वह बाबा का प्यार पाता है। उस समय सुस्ती न आये। यदि सिर में दर्द भी होगा तो ठीक हो जायेगा। जो अच्छी तरह प्यार से बाबा को याद करता है, बाबा उसे कहता - बच्चे, मैं तुम्हारी माँ भी हूँ, प्रीतम भी हूँ... वह बहुत प्यार करता है। उस प्यार में उसी समय मन का दुःख व शरीर का दर्द सब चला जायेगा। यह धारणा है। कोई-कोई कहते हैं मुझे खुशी का अनुभव नहीं होता। लेकिन अनुभव तब हो जब ज्ञान को धारण करो और औरों को दान करो। समय पर जो सेवा सामने आये, उसे दिल से सच्चाई से, प्रेम से करो तो खुशी आयेगी। जो मजबूरी से काम करता उसे खुशी नहीं आती। जो काम दिल से करता, उसे खुशी आती है। अच्छा - ओम् शान्ति।